P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-II, November-2015
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

थारू जनजाति के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शिक्षा में सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

राकेश कुमार
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग, बिडला परिसर,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल
विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

एस0 के0 लखेडा
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग, बिडला परिसर,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल
विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के प"चात सरकार ने पिछडे वर्गों की f"ाक्षा की पगति के लिए कई प्रयास किये। यही कारण है कि कुछ वर्ग न केवल इससे लाभान्वित हुए वरन् इनमें f"ाक्षा एवं रोजगार के अवसर प्राप्त करने की इच्छा भी जाग्रत हुई। इसका प्रभाव उत्तराखण्ड राज्य की जनजातियों पर भी पड़ा। उत्तराखण्ड में निवास कर रही भोटिया, जौनसारी, बाक्सा, थारू एवं राजी जनजातियाँ आज f"ाक्षा के महत्व को समझ चुकी हैं एवं दे"ा के विकास में अपना योगदान देने के लिए सक्षम हो रही है। प्रस्तुत शोध लेख में उत्तराखण्ड राज्य की थारू जनजाति के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के f"ाक्षण में आ रही प्रमुख समस्याओं का संक्षिप्त अध्ययन किया जा रहा है।

मुख्य शब्दः शासकीय विद्यालय, अनुसूचित जनजाति, सामाजिक समस्या एवं तुलनात्मक अध्ययन।

पस्तावना

जातियों का ताना–बाना भारतीय संस्कृति की वि"ोषता रही है। पुरातन काल से ही भारतीय समाज एवं संस्कृति अनवरत बदलावों के मध्य अपना महत्व बनाये हुये है। जिसका लेखा–जोखा धर्म शास्त्रों, पुराणों एवं एतिहासिक ग्रन्थों के साथ–साथ हिन्दी साहित्य में भी परिलक्षित होता है। आ"ाय यह कि भारतीय समाज की विडम्बनामयी वर्णवादी व्यवस्था को दोयम दर्जे की समझने वाली मानसिकता के चलते जनजाति की सामाजिक हैसियत निम्न समझी जाती रही ह तथा आदिवासी एवं पिछडे वर्ग के बहुसंख्यक वर्ग सदियों तक मानवीय अधिकारों से वंचित रखता आया है।

भारतीय समाज में f"ाक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही राष्ट्र के शीर्ष नेताओं ने f"ाक्षा के योगदान के महत्व को स्वीकार किया एवं राष्ट्रीय विकास में f"ाक्षा की भूमिका को प्रभावी बनाने के लिए f"ाक्षा में समुचित विकास की आव"यकता पर जोर दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त राष्ट्र की नवीन आव"यकताओं तथा जनसाधारण की आकांक्षाओं के अनुरूप दे"ा की f"ाक्षा व्यवस्था में समय–समय पर अनेक सार्थक परिवर्तन किये गये, कई आयोगों का गठन तथा f"ाक्षा नोतियों की भी घोषणा की गयी। साथ ही राष्ट्र के सभी नागरिकों को बिना किसी भेद–भाव के समान गुणवत्ता वाली f"ाक्षा प्राप्त करने के समान अवसर मिल सकें, सभी नागरिकों का सर्वागीण विकास हो सके, इसके लिए f"ाक्षा को महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया गया।

उत्तराखण्ड राज्य मे थारू जनजाति जनसंख्या, शैक्षिक एवं सामाजिक आधार पर तथा अपनी वि"िाष्ट संस्कृति के कारण दूसरे स्थान पर है। राज्य में सर्वाधिक और सबसे कम आबादी वाले जिले क्रम"ाः ऊधमसिंह नगर (1,23,037) और रूद्रप्रयाग (386) है। राज्य में सर्वाधिक और सबसे कम साक्षरता वाले जिले क्रम"ाः रूद्रप्रयाग (86.3%) व ऊधमसिंह नगर (62.1%) है। इस कारण 1961 में थारू जाति को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया। जिसके बाद इन्हें सरकारी नौकरिया और उच्च f"ाक्षण संस्थानों में आरक्षण मिला। बावजूद इसके उत्तराखण्ड में इस जनजाति के लोग भोटिया और जौनसारो जनजातियों की तुलना में पिछड हुए है। जहाँ एक तरफ भोटिया और जौनसारी जनजाति के लोग सरकारी सेवाओं में आरक्षण के कारण विभिन्न राज्य एवं केन्द्रीय सेवाओं में स्थान पा रहे है, वही दूसरी तरफ थारू जनजाति के युवाओं में आज

भी इस जागरूकता एवं विकास का अपेक्षाकृत अभाव दिखाई दता है। थारू जनजाति के युवाओं में अपनी उन्नत्ति हेतु इस जागरूकता का विकास ि"ाक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि जब तक जनजातीय लोगों के जीवन में सामाजिक समस्याऐं रहेंगी तब तक जनजातियों के सम्रग सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए किए गये केन्द्र तथा राज्यों के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो जायेंगें। सरकार द्वारा जनजातियों के विकास हेतु संचालित की जाने वाली विभिन्न योजनाओं के उपरान्त भी जनजातियों का अपेक्षित विकास न कर पाना यह द"ार्ाता है कि जनजातीय ि"ाक्षा के मार्ग में कुछ ऐसी समस्याऐं है जो इन्ह ि"ाक्षित एवं विकसित होने स रोक रही है। यह समस्याऐं विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धित जनजातीय एवं गैर जनजातीय स्कूली छात्रों में सांस्कृतिक अन्तर होने के कारण समायोजन की समस्या, विद्यालयों का घर से दूर होना, भाषा की समस्या, साथियों का भेद–भावपूर्ण व्यवहार, छात्रवृत्ति का कम होना, आर्थिक एवं स्वास्थ्य समस्या एवं विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समस्या या अन्य कोई मनोवैज्ञानिक समस्या हो सकती है।

सन् 2011 की जनगणना के आधार पर उत्तराखण्ड राज्य में जनजातियों की जनसंख्या एवं साक्षरता का विवरण तालिका संख्या– 1 में दिया जा रहा है।

तालिका संख्या – 1

उत्तराखण्ड राज्य में जनजातियों की जनसंख्या व साक्षरता का विवरण

जनगणना 2011 के अन्तिम आंकड़ों के अनुसार

जनपद	जिले में ST आबादी	जिले की कुल आबादी में ST %	औसत साक्षरता %	पुरूष साक्षरता %	महिला साक्षरता %
उत्तरका"ाी	3,512	1.06	76.8	91.2	64.2
चमोली	12,260	3.13	85.7	95.3	76.8
रूद्रप्रयाग	386	1.60	86.3	89.4	82.1
टिहरी	875	0.14	78.4	84.0	72.2
देहरादून	1,11,663	6.58	73.7	84.4	63.0
पौड़ी	2,215	0.32	79.3	88.7	68.4
पिथौड़ागढ़	19,535	4.04	84.4	93.5	75.8
बागे"वर	1,982	0.76	82.8	93.1	73.2
अल्मोडा	1,281	0.20	82.6	97.7	87.8
चम्पावत	1,339	0.51	77.3	86.1	64.5
नैनीताल	7,495	0.78	76.2	84.0	68.2
ऊधमसिंह नगर	1,23,037	7.46	62.1	71.4	51.4
हरिद्वार	6,323	0.33	70.6	79.7	60.7
उत्तराखण्ड राज्य	**2,91,903**	**2.9**	**73.9**	**83.8**	**62.5**

स्त्रोतः उत्तराखण्डः एक समग्र अध्ययन, बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद

उद्देश्य

1 ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्रों की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2 ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3 शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्रों की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2 ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3 शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ि"ाक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शाध सीमायें

प्रस्तुत अध्ययन में कुमाऊँ मण्डल के जनपद ऊधमसिंह नगर के शहरी व ग्रामीण शासकीय माध्यमिक स्तर के कुल 120 छात्र–छात्राओं को लिया गया है। जिसे तालिका संख्या– 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या– 2

शहरी व ग्रामीण छात्र–छात्राओं की तालिका

शहरी		ग्रामीण		कुल
छात्र	छात्राओं	छात्र	छात्राओं	
35	25	35	25	120

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि का प्रयोग।

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत थारू जनजाति के विधार्थियों की विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे– आर्थिक समस्या, पाठ्यक्रम की समस्या, विद्यालय समस्या, प्रतिकूल परिवे"ा व स्वास्थ्य समस्या के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक बाधा प्र"नावली का उपयोग किया गया।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-II, November-2015
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

उपकरण– ि"ाक्षा में सामाजिक बाधा प्र"नावली।

उपकरण के अंकन की विधि

थारू जनजाति की जनसंख्या का अध्ययन करने के लिए जनपद ऊधमसिह नगर के आंकडों को संग्रहित किया गया तथा स्वनिर्मित सामाजिक बाधा प्र"नावली के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे– आर्थिक समस्या, पाठ्यक्रम की समस्या, विद्यालय समस्या, प्रतिकूल परिवे"ा व स्वास्थ्य समस्या आदि का अध्ययन किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के वि"लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

ऊधमसिंह नगर की थारू जनजाति के छात्रों की विभिन्न समस्याओं के आधार पर अध्ययन के विवरण को तालिका संख्या– 3, 4 एवं 5 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 3

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शिक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

सामाजिक समस्या के प्रकार	शहरी क्षेत्र के छात्र			ग्रामीण क्षेत्र के छात्र			मानक त्रुटी	टी–परिक्षण	सार्थकता स्तर	
	सं	मध्यमान	मा० वि०	सं०	मध्यमान	मा० वि०			0.05	0.10
आर्थिक समस्या	60	66.17	14.62	60	67.67	11.81	2.43	0.62	NS	NS
पाठ्यक्रम की समस्या	60	69.50	13.83	60	71.33	15.05	2.64	0.69	NS	NS
विद्यालय समस्या	60	63.67	15.11	60	64.67	14.02	2.66	0.37	NS	NS
प्रतिकूल परिवे"ा	60	62.50	14.10	60	60.83	12.53	2.43	0.69	NS	NS
स्वास्थ्य समस्या	60	68.83	12.17	60	62.5	13.23	2.32	1.88	NS	S

नोट– NS –सार्थक नहीं है। S –सार्थक है।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में छात्राओं को, छात्रों की अपेक्षा स्वास्थ्य समस्या का सामना अधिक करना पड़ता है, जबकि शहरी क्षेत्र के छात्रों को ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा स्वास्थ्य समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है।

तालिका संख्या – 4

ग्रामीण छात्र एवं छात्राआं की शिक्षा में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

सामाजिक समस्या के प्रकार	ग्रामीण क्षेत्र के छात्र			ग्रामीण क्षेत्र के छात्राएं			मानक त्रुटी	टी–परिक्षण	सार्थकता स्तर	
	सं	मध्यमान	मा० वि०	सं०	मध्यमान	मा० वि०			0.05	0.10
आर्थिक समस्या	35	73.06	11.48	25	66.20	10.79	2.82	2.35	S	S
पाठ्यक्रम की समस्या	35	69.86	13.17	25	71.80	16.73	4.02	.48	N	N
विद्यालय समस्या	35	63.00	15.45	25	67.00	13.86	3.81	1.05	N	N
प्रतिकूल परिवे"ा	35	60.14	12.57	25	67.00	13.86	3.49	1.94	N	S
स्वास्थ्य समस्या	35	62.43	11.79	25	71	11.31	3.01	2.85	S	S

नोट– NS –सार्थक नहीं है। S –सार्थक है।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा, छात्राओं को आर्थिक समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ता है। जिससे छात्राऐं ि"ाक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती है। जिसके कारण ये राष्ट्र के विकास में सहयोग नहीं कर पाती है।

अतः सरकार को इनकी आर्थिक समस्या का समाधान करने हेतु इनकी छात्रवृत्ति की धनरा"ाि बढ़ानी चाहिए। जिससे ये ि"ाक्षित होकर राष्ट्र के विकास मे अपना योगदान दे सके।

तालिका संख्या – 5

शहरी छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा मे विभिन्न सामाजिक समस्याओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

सामाजिक समस्या के प्रकार	शहरी क्षेत्र के छात्र			शहरी क्षेत्र के छात्राएं			मानक त्रुटी	टी–परिक्षण	सार्थकता स्तर	
	सं	मध्यमान	मा० वि०	सं०	मध्यमान	मा० वि०			0.05	0.10
आर्थिक समस्या	35	67.57	14.01	25	63.00	12.96	3.51	1.30	NS	NS
पाठ्यक्रम की समस्या	35	66.14	13.68	25	69.40	13.34	3.53	0.92	NS	NS
विद्यालय समस्या	35	66.14	14.01	25	64.60	15.87	3.96	0.12	NS	NS
प्रतिकूल परिवे"ा	35	61.5	12.36	25	74.33	8.54	3.53	3.63	S	S
स्वास्थ्य समस्या	35	67.28	11.23	25	67	15.31	3.71	0.10	NS	NS

नोट– NS –सार्थक नहीं है। S –सार्थक है।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की ि"ाक्षा में प्रतिकूल परिवे"ा का सामना अधिक करना पड़ता है। जिसके कारण छात्राआ की ि"ाक्षा की स्थिति सन्तोषप्रद नहीं है। अतः समाज को स्वस्थ वातावरण बनाने में सहयोग करना चाहिए।

शोध के परिणाम

1. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को आर्थिक समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है।
2. ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को ि"ाक्षा में प्रतिकूल परिवे"ा का सामना अधिक करना पड़ता है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को छात्रों की अपेक्षा स्वास्थ्य समस्या का सामना अधिक करना पड़ता है।

निष्कर्ष

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात होता है कि थारू जनजाति के छात्र विभिन्न सामाजिक समस्याओं के कारण उस अनुपात में ि"ाक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे है, जिस अनुपात में अन्य जनजाति के छात्र–छात्राएं ि"ाक्षा प्राप्त कर रहे है। थारू समाज का ि"ाक्षित होना आव"यक है। जिससे यह राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग दें सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौल, लोके"ा (2009), ***''मैथोडोलॉजि ऑफ एज्केशनल रिर्सच''*** विकास पब्लि"िांग हाउस पी० भी० टी० लिमिटेड, नई दिल्ली.
2. गुप्ता, एस० पी० एण्ड, अल्का (2010) ***''एडवांस एज्केशनल साइकोलॉजी''*** शारदा बुक डिपों, इलाहाबाद
3. सिंह, अरूण कुमार (2006) ***''रिसर्च मैथोडोलॉजि इन साइकोलॉजी, सोशियोलॉजी एण्ड एजुकेशन'',*** मोतीलाल बनारसो दास पब्लिके"ान, दिल्ली
4. भुषण, ए०, ***''वैल्युस एक्रौस सेक्स एण्ड फैमिली वोकेशन''*** स्कूल ऑफ एजुके"ान एच० पी० यू० 113
5. शर्मा, डी०डी० (1981) ***''डीफ्रेन्टीयल वैल्युज ऑफ स्टुडेंन्ट एण्ड टीचर एज ए फन्कसन ऑफ वेरियस सोशल फेरेवोरी*** ''पी०एच०डी० थोसिस, साइकोलॉजी, जे०ओ० डी० जी०, 1997, IBP 206.
6. कालवा, ए०डी० (1981) ***''ए स्टडी ऑफ वैल्यूज एण्ड आइडियल ऑफ अरली एंडोलेसेंश लर्निंग इन डिफरेन्ट टाइप ऑफ होम एन्वायरमेंट''*** पी०एच०डी० थीसिस एजके"ान पी०ए०एन०वी. 1981 Pg 4316-
7. त्रिपाठी, केशरीनन्दन (2014–15), ***उत्तराखण्डः एक समग्र अध्ययन,*** इलाहाबाद बौधिक प्रकाशन, अल्लापुर।
8. http//www.soodh ganga.ac.in